ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

समाज, साहित्य, कला की अपूरणीय क्षति

अजीज साहित्यकारों के निधन पर हिंदी विवि में दी गई श्रद्धांजलि

विद्यासागर नौटियाल

शहरयार

'दिल चीज क्या है, आप मेरी जान लीजिये (उमराव जान)' जैसे लोकप्रिय गीत लिखने वाले ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित उर्दू के मशहूर शायर अखलाक मोहम्मद खान 'शहरयार', रंगकर्मी अलखनंदन व सुप्रसिद्ध साहित्यकार विद्यासागर नौटियाल के निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

विश्वविद्यालय के गांधी हिल पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में इन साहित्यकारों के साहित्यिक अवदानों पर विमर्श किया गया। विमर्श का लब्बोलुआब यही था कि इन साहित्यकारों के निधन से समाज, साहित्य व कला की अपूरणीय क्षति हुई है। भरे हुए हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार व विवि के 'राइटर-इन-रेजीडेंस' से.रा. यात्री ने कहा कि बहुत से लोग गुमनाम चले जाते हैं और समाज के लिए बहुत बड़ा काम कर जाते हैं, ऐसे ही काम के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं ये तीनों साहित्यकार। जो आम जनों के यथार्थ से जुड़े थे। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि क्या हम किसी असहाय की बीमारी, उनकी आर्थिक विपन्नता में सहभागी हो पा रहे हैं। इन साहित्यकारों के साहित्यिक अवदान निरंतर सामने आते रहें और हम समाज को कुछ दे पाएं तो ही इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वरिष्ठ पत्रकार व विवि के प्रो. रामशरण जोशी ने तीनों के साथ बिताये पलों को साझा करते हुए कहा कि ये गहरे सामाजिक सरोकारों से जुड़े थे। जहां कॉमरेड नौटियाल समाज के हाशिये के लिए लिखते रहे वहीं शहरयार की ग़ज़लों में आम इंसानों के दर्द बयां होते थे। रंगकर्मी अलखनंदन नाटक के माध्यम से सामाजिक विकृतियों को सामने लाते रहे। विवि के नाट्य एवं फिल्म विभाग से संबंद्ध प्रो. रवि चतुर्वेदी ने कहा कि रंगकर्मी अलखनंदन का जाना स्वाभाविक

प्रतीत नहीं होता। चुनौतीपूर्ण वातावरण में कला और साहित्य को एक साथ लेकर चलने वालों में से एक थे। उनका जाना एक बड़े सामाजिक परिवेश का जाना है। साहित्य विद्यापीठ के टीचर फैलो उमाकांत चौबे ने अलीगढ़ में शहरयार के साथ व देहरादून में नौटियाल के साथ बिताये पलों को याद करते हुए कहा कि नौटियाल जी से मिलने गया तो वे स्थानीय साहित्यकारों को बुला लेते और सामाजिक समस्याओं पर विमर्श करते थे। हाल ही में अलखनंदन से हुई मुलाकात का जिक्र करते हुए नाट्य एवं फिल्म अध्ययन विभाग के छात्र रोहित कुमार ने कहा कि बीमारी की हालत में जब उन्होंने ये जाना कि मैं उनसे शोधकार्य के लिए मिलना चाहता हूं तो उन्होंने मुझे वक्त दिया। बातचीत के दौरान उनकी गहरी चिंता झलकती थी कि आज के युवा मेहनत करने से कतराते हैं, शोधकार्य बहुत अच्छे ढंग का नहीं हो पा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान दो मिनट का मौन रखकर तीनों साहित्यकारों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संयोजन एवं संचालन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र ने किया। इस अवसर पर विवि के डॉ. जयप्रकाश 'धूमकेतु', डॉ.एम.एल. कासारे, शंभु दत्त सती, शिवप्रिय, मनोज पाण्डेय, सुमित सौरभ, विनय तिवारी सहित कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद थे।

बी. एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी